# परमात्म ऊर्जा

## जो बाबा का कार्य...वही बच्चों का

अपने को बाबा के हर कार्य में सदा साथी समझते हो? जो बाबा का कार्य है वह हमारा कार्य है। बाबा का कार्य है पुरानी सृष्टि को नया बनाना, सबको सुख-शान्ति का अनुभव कराना। यही बाबा का कार्य है। तो जो बाबा का कार्य है वह बच्चों का कार्य है। तो अपने को सदा बाबा के हर कार्य में साथी समझने से सहज ही बाबा याद आता है। कार्य को याद करने से कार्य-कर्ता की याद स्वतः ही आती है। इसी को ही कहा जाता है सहज याद। तो सदा याद रहती है या करना पड़ता है? जब कोई माया का विघ्न आता है फिर याद करना पड़ता है। वैसे देखो, आपका यादगार है विघ्न विनाशक। गणेश को क्या कहते हैं? विघ्न विनाशक। तो विघ्न विनाशक बन गये कि नहीं? विघ्न विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न विनाशक। अपने ही विघ्न विनाशक नहीं, अपने में ही लगे रहे तो विश्व का कल्याण कब करेंगे? तो सारे विश्व के विघ्न-विनाशक हो। इतना नशा है? कि अपने ही विघ्नों के भाग-दौड़ में लगे रहते हो? विघ्न विनाशक वही बन सकता है जो सदा सर्व शक्तियों से सम्पन्न होगा। अगर कोई शक्ति नहीं होगी तो विघ्न विनाश नहीं कर सकते। विश्व के विघ्न विनाशक के आगे कोई भी विघ्न आ नहीं सकता। अगर अपने पास ही आता रहेगा तो दूसरे का क्या विनाश करेंगे! सर्व शक्तियों का खज़ाना है? या थोड़ा-थोड़ा है? कोई भी खज़ाना अगर कम होगा तो समय पर विजय प्राप्त नहीं कर सकेंगे। तो सदा अपना स्टॉक चेक करो कि सर्व खज़ाने हैं, सर्व शक्तियां हैं? क्योंकि बाबा ने सभी को सर्व शक्तियां दी हैं। या किसको कम दी हैं, किसको ज़्यादा दी हैं? सबको सर्व शक्तियां दी हैं ना। और अपने को कहलाते भी हो मास्टर सर्वशक्तिवान। तो सर्व शक्तियां मेरा वर्सा कभी जा नहीं सकता। अगर किसी को बहुत बड़ा वर्सा मिल जाये तो कितना नशा, कितनी खुशी रहती है। आपको तो अविनाशी वर्सा मिला है। तो नशा भी अविनाशी चाहिए। तो सदा नशा रहता है? बालक अर्थात् मालिक। सबसे बड़ा खज़ाना है ही खुशी। अगर खुशी है तो सब कुछ है, खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। इतना पक्का बनना ही ब्राह्मण जीवन है।

## पाना था सो पा लिया... यह गीत सदा गाते रहो

बाबा को प्रत्यक्ष करने की विधिः सभी चलते-फिरते प्रत्यक्ष प्रमाण रूपी चेतन संग्रहालय बन जाओ और चलता-फिरता प्रोजेक्टर बन जाओ। खुद ही प्रदर्शनी बनो, खुद ही गाइड बनो।

चलते-चलते कई बच्चों को मार्ग मुश्किल अनुभव होने लगता है। कभी सहज समझते हैं, कभी मुश्किल समझते हैं। कभी खुशी में नाचते हैं, कभी दिलशिकस्त हो बैठ जाते हैं। कभी बाबा के गुण गाते और कभी 'क्या और कैसे' के गुण गाते हैं। कभी शुद्ध संकल्पों के सर्व खज़ानों के प्राप्ति की माला सुमिरण करते, कभी व्यर्थ संकल्पों के तूफान वश 'मुश्किल है' 'मुश्किल है' - यह माला सुमिरण करते हैं। कारण क्या? सिर्फ पुरुषार्थी समझते हैं, प्रालब्ध को भूल जाते हैं। छोड़ना क्या है - उसको सामने रखते हैं और लेना क्या है उसको पीछे रखते हैं। जबकि छोड़ने वाली चीज़ को पीछे किया जाता है, लेने वाली चीज़ को आगे। कभी भी लेने समय पीछे हटना नहीं होता, आगे बढ़ना होता है। 'लेना' स्मृति में रखना अर्थात् बाप के सम्मुख होना। छोड़ने के गुण ज़्यादा गाते हो। यह भी किया, यह भी करना है व करना पड़ेगा। इसको ज़्यादा सोचते हो। क्या मिल रहा है व प्रालब्ध क्या बन रही है, उसको कम सोचते हो। इसलिए व्यर्थ का वज़न भारी हो जाता है। शुद्ध संकल्पों का वज़न हल्का हो जाता है। तो चढ़ती कला के बजाए बोझ स्वतः ही नीचे ले आता है। 'पाना था सो पा लिया' गाते रहो और प्राप्ति की खुशी में नाचते रहो। तो घुटके और झुटके खत्म हो जायेंगे। ऐसे डबल प्रूफ प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करेंगे। यह है प्रत्यक्ष करने की विधि जो चलते-फिरते प्रत्यक्ष प्रमाण रूपी चेतन संग्रहालय रूप बन जाओ और चलता-फिरता प्रोजेक्टर बन जाओ। चरित्र-निर्माण प्रदर्शनी बन जाओ तो जगह-जगह पर प्रदर्शनी और म्यूज़ियम हो जायेंगे। खर्चा कम और सेवा ज़्यादा हो जायेगी। खुद ही प्रदर्शनी बनो, खुद ही गाइड बनो। आजकल चलती-फिरती लायब्रेरी, प्रदर्शनियां बनाते हैं ना। तो 60 हज़ार ब्राह्मण, 60 हज़ार चलती-फिरती प्रदर्शनियां-म्यूज़ियम हो जाएं तो प्रत्यक्षता कितने में होगी। समझा। इस वर्ष 60 हज़ार मूविंग प्रदर्शनियां व प्रोजेक्टर सारे विश्व के चारों ओर फैल जाओ तो इकॉनमी की एडवरटाइज़मेंट हो जायेगी। खर्चे के बजाए इनाम मिलेगा।

# कथा सरिता

## बुढ़ापे का बचपन

मोहन बेटा! मैं तुम्हारे काका के घर जा रहा हूँ। क्यों पिता जी? और आप आजकल काका के घर बहुत जा रहे हो! आपका मन मान रहा हो तो चले जाओ पिताजी। लो ये पैसे रख लो, काम आएंगे। पता जी का मन भर आया। उन्हें आज अपने बेटे को दिए गए संस्कार लौटते नज़र आ रहे थे। जब मोहन स्कूल जाता था, वह पिता जी से जेब खर्ची लेने में हमेशा हिचकता था, क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। पिता जी मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से घर चला पाते थे। पर माँ फिर भी उसकी जेब में कुछ सिक्के डाल देती थी। जबकि वह बार-बार मना करता था। मोहन की पत्नी का स्वभाव भी उसके पिता जी की तरफ कुछ खास अच्छा नहीं था। वह रोज़ पिता जी की आदतों के बारे में कहासुनी करती थी। उसे बड़ों की टोका-टाकी पसंद नहीं थी। बच्चे भी दादा के कमरे में नहीं जाते, मोहन को भी देर से आने के कारण बात करने का समय नहीं मिलता।

एक दिन उसने पिता जी का पीछा किया। आखिर पिता जी को काका के घर जाने की इतनी जल्दी क्यों रहती है? वह यह देखकर हैरान रह गया कि पिता जी तो काका के घर गये ही नहीं, वह तो स्टेशन पर एकान्त में शून्य एक पेड़ के सहारे बैठ गये। तभी पास खड़े एक बुज़ुर्ग, जो यह सब देख रहे थे, उन्होंने कहा, बेटा! क्या देख रहे हो?

जी...वो!

अच्छा, तुम उस बूढ़े आदमी को देख रहे हो? वो यहाँ अक्सर आते हैं और घंटों पेड़ तले बैठ कर सांझ ढ़ले अपने घर लौट जाते हैं। किसी अच्छे संभ्रांत घर के लगते हैं। बेटा! ऐसे एक नहीं अनेकों बुजुर्ग माएं, बुजुर्ग पिता तुम्हें यहाँ आसपास मिल जाएंगे।

जी, मगर क्यों?

बेटा! जब घर में बड़े-बुजुर्गों को प्यार नहीं मिलता, उन्हें बहुत अकेलापन महसूस होता है, तो वे यहाँ-वहाँ बैठ कर अपना समय काटा करते हैं। वैसे क्या तुम्हें पता है, बुढ़ापे में इन्सान का मन बिल्कुल बच्चे जैसा हो जाता है। उस समय उन्हें अधिक प्यार और सम्मान की ज़रूरत पड़ती है। पर परिवार के सदस्य इस बात को समझ नहीं पाते। वो यही समझते हैं कि इन्होंने अपनी ज़िंदगी जी ली है, फिर उन्हें अकेला छोड़ देते हैं। कहीं साथ ले जाने से कतराते हैं। बात करना तो दूर अक्सर उनकी राय भी उन्हें कड़वी लगती है। जबकि वही बुजुर्ग अपने बच्चों को अपने अनुभवों से आने वाले संकटों और परेशानियों से बचाने के लिए सटीक सलाह देते हैं।

घर लौटकर मोहन ने कुछ नहीं कहा। जब पिता जी लौटे, मोहन घर के सभी सदस्यों को देखता रहा। किसी को भी पिता जी की चिंता नहीं थी। पिता जी से कोई बात नहीं करता, कोई हँसता खेलता-नहीं था। जैसे पिता जी का घर में कोई अस्तित्व ही न हो। ऐसे परिवार में पत्नी-बच्चे सभी पिता जी को इग्नोर करते हुए दिखे।

सबको राह दिखाने के लिए आखिर मोहन ने भी अपनी पत्नी और बच्चों से बोलना बंद कर दिया। वो काम पर जाता और वापस आता, किसी से कोई बातचीत नहीं। बच्चे, पत्नी बोलने की कोशिश भी करते तो वह भी काम में डूबे रहने का नाटक करता। तीन दिन में सभी परेशान हो उठे। पत्नी, बच्चे उदासी का कारण जानना चाहते थे। मोहन ने अपने परिवार को अपने पास बिठाया। उन्हें प्यार से समझाया कि मैंने तो सिर्फ चार दिन बात नहीं की तो तुम कितने परेशान हो गए। अब सोचो तुम पिता जी के साथ ऐसा व्यवहार करके उन्हें कितना दुःख दे रहे हो?

मेरे पिता जी मुझे जान से प्यारे हैं। जैसे तुम्हें तुम्हारी माँ! और फिर पिताजी के अकेले स्टेशन जाकर घंटों बैठकर रोने की बात बताई। सभी को अपने बुरे व्यवहार का खेद था। उस दिन जैसे ही पिताजी शाम को घर लौटे, तीनों बच्चे उनसे चिपट गए। दादा जी! आज हम आपके पास बैठेंगे। कोई किस्सा-कहानी सुनाओ ना!

पिता जी की आँखें भीग आईं। वो बच्चों को लिपटाकर उन्हें प्यार करने लगे। और फिर जो किस्से-कहानियों का दौर शुरु हुआ वो घंटों चला। इस बीच मोहन की पत्नी उनके लिए कभी फल, तो कभी चाय, नमकीन लेकर आती। पिता जी मोहन और बच्चों के साथ स्वयं भी खाते और बच्चों को भी खिलाते। अब घर का माहौल पूरी तरह बदल गया था।

एक दिन मोहन बोला, पिता जी! क्या बात है, आजकल काका के घर नहीं जा रहे हो? नहीं बेटा, अब तो अपना घर ही स्वर्ग लगता है।

आज सभी में तो नहीं, लेकिन अधिकांश परिवारों के बुजुर्गों की यही कहानी है। आप भी कभी न कभी अवश्य बूढ़े होंगे। आज नहीं तो कुछ वर्षों बाद होंगे। घर के बुजुर्ग ऐसे बूढ़े वृक्ष हैं, जो बेशक फल न देते हों, पर छाँव तो देते ही हैं।

ध्यान रखिएगा कि आपके बच्चे भी आपसे ही सीखेंगे। अब ये आपके ऊपर निर्भर है कि आप उन्हें क्या सिखाते हैं!

जिंतूर-महा.। तहसील में रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन तथा तहसील ऑफिस के कर्मचारी।